आपातकाल में सृजन फुलवारी

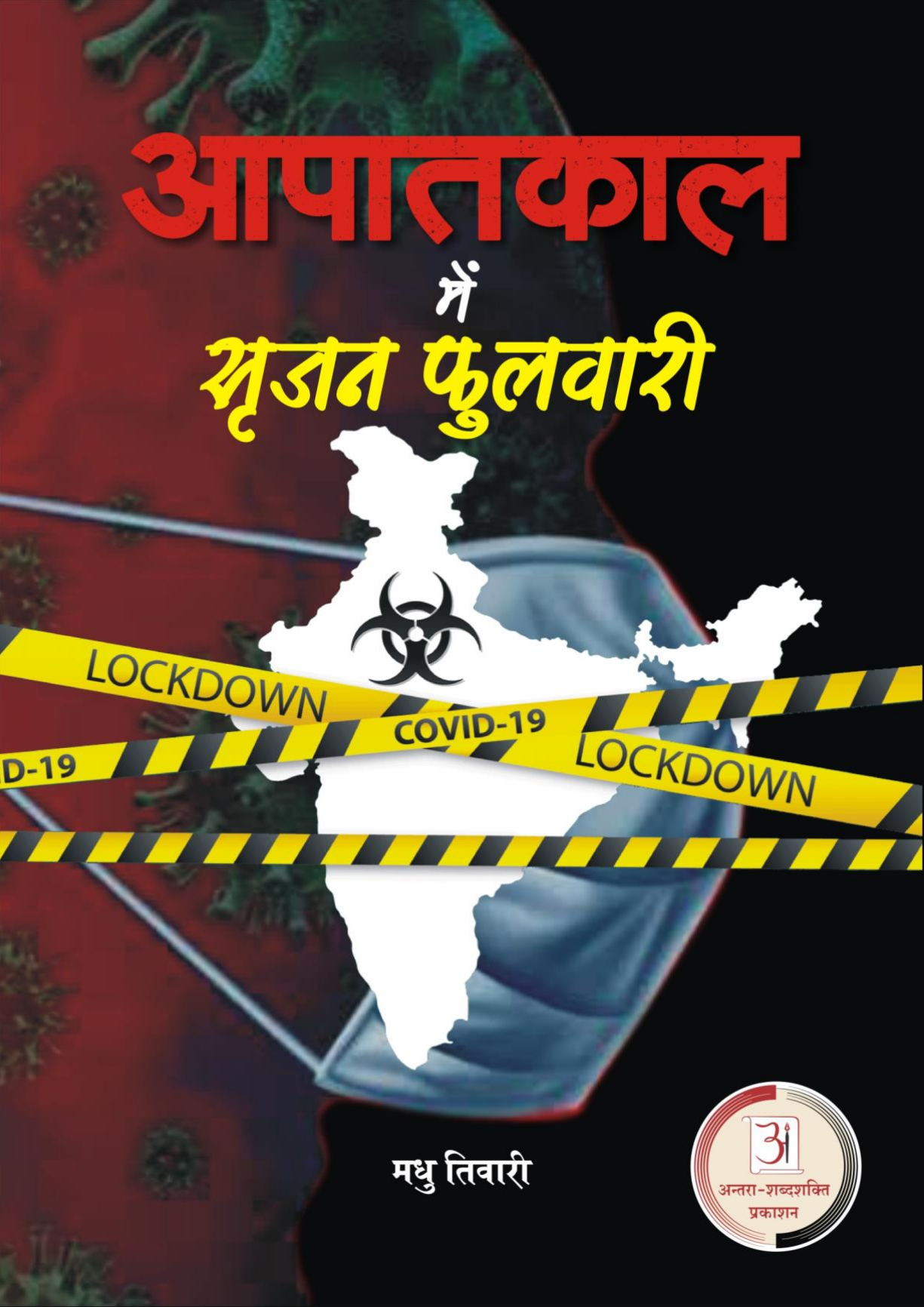

मधु तिवारी

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

मधु तिवारी

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

माता जी को समर्पित

978-93-5372-124-4

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159

मोबाईल- 9424765259

ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com

वेबसाईट- www.antrashabdshakti

प्रथम संस्करण- 2020 मधु तिवारी

मूल्य- 50.00 रूपये

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY MADHU TIWARI

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	बहुत है	6
2.	कटते पेड़	7
3.	उलझन	8
4.	मूर्ख	9
5.	नयन	10
6.	बालिका	11
7.	बासंती	12
8.	जब से	13
9.	चुपके-चुपके	14
10.	भूख	15
11.	पुकार	16
12.	भाईचारा	17
13.	जीवन साथी	18
14.	सहारा	19-20
15.	तपस्या	21

बहुत है

प्यार न मिले तो खलता बहुत है।
नफरतों से दिल जलता बहुत है।

सही गलत की सुधी नहीं रहती,
युवा का खून उबलता बहुत है।

संत कहे वो गलत ही कहाँ है,
उम्र यह जल्दी ढलता बहुत है।

रिश्तों को न शीतलता मिले तो,
ताप में वह भी गलता बहुत है।

खोटा भी सिक्का होगा भी तो,
अँधेरे मे वह चलता बहुत है।

सीधा हुआ गर इंसान कोई,
वह इस जहां में छलता बहुत है।

परजीवी हो पौध या इंसान,
वह इस जहाँ में पलता बहुत है।

भ्रष्टाचारी ही लोग पनपते,
ऊपरी कमाई फलता बहुत है।

बुरा काम चलता जहाँ बहुत ही,
भला काम यहाँ टलता बहुत है।

कटते पेड़

बहुत दुखद यह बात है,
कटते जाते पेड़।
जंगल जीवन उजड़ रहे,
मानव रहा खदेड़।1।

मानव अब तो ध्यान धर,
जंगल को मत काट।
भू से हरियाली मिटा,
भवनों से मत पाट।2।

धरती को श्रृंगार से,
करना मत यूँ दूर।
तरुवर गहना है सदा,
तरुवर उसका सिंदूर।3।

कटते तरुवर दे रहे,
मानव तुमको शाप।
बाढ़ और भूकंप फल,
भुगत रहे हो आप।4।

जितना तुम से हो सके,
पौध लगाना खूब।
उसकी सेवा में सदा,
हे मानव! अब डूब।5।

उलझन

उलझन भरी जिंदगानी यहाँ है।
सुलझन भरी भी रवानी यहाँ है।

मरते हुए जो वतन पर हमारे,
उफ्फ न कहे वह जवानी यहाँ है।

दिखाए राह संसार को सारा,
संस्कृति हमारी पुरानी यहाँ है।

दर्श और आदर्श को समेटे,
महापुरुषों की कहानी यहाँ है।

नैना,हृदय को करदे जो शीतल,
ऐसे ही दृश्य सुहानी यहाँ है।

बुद्धि के बल पर लोहा मनवाए,
शक्ति दिखाती नूरानी यहाँ है।

मूर्ख

वह बुद्धिमान,
चार लोगों में उठना-बैठना
कहलाता समझदार।
अपने मेहनत के दम पर,
करता व्यापार।
फलता फूलता कारोबार,
खूबसूरत लगता
यह संसार।
खूब दाद देते लोग,
वह फूला ना समाता।
अपनी तरक्कियों पर,
मंद मंद मुस्काता।
अचानक यह क्या हुआ?
वही घर-परिवार....
और सारा संसार....
खुद भी वही....
पर यह कैसा बदलाव?
वह बुद्धिमान से मूर्ख बन गया।
उसे समझ ना आया,
उससे क्या पाप हो गया।
इतनी सी बात न जाना,
अब युवा बेटे का बाप हो गया।

नयन

तुमको नयन निहारे मेरे।
कान्हा तुम हो प्यारे मेरे।

ये जग देखो क्लेश भरा है,
तुम ही कष्ट निवारे मेरे।

मीरापति गिरधर तुम ही हो,
राधा कहे सखारे मेरे।

मनमंदिर में बस जाना प्रभु,
खोल रखे जो द्वारे मेरे।

तुम्हें तकेे तो तकते रहते,
कभी नयन ना हारे मेरे।

लेते तेरे नाम श्याम जी,
होते रहे गुजारे मेरे।

तुम ही सूरज चाँद तुम्हीं हो,
तुम्हीं नयन के तारे मेरे।

और न कोई सच्चा साथी,
तुम ही एक सहारे मेरे।

बालिका

जिसके घर बेटी रहे,
वह है खूब महान।
घर में लाती है खुशी,
कहते सुनो सुजान।1।

प्यारी होती बालिका,
मात-पिता की जान।
जीवन भर करती रहे
बेटी सबका मान।2।

बेटी को यों कोंख में,
मूरख तू मत मार।
सुनले बेटी के बिना
सूना है संसार।3।

बेटी बेटा एक है,
मत करना तू भेद।
बेटी जब सज्ञान हो,
तुमको होगा खेद।4।

दोहे लिखती मधु अभी,
गिनकर केवल पाँच।
बेटी हेतू जो कहे,
सोलह आने साँच।5।

बसंती

देख बसंती हंसती आई।
फूलों कलियों में मुस्काई।।
सरर सरर चलती पुरवाई।
तन मे मन में देख समाई।1।

भँवरे गुनगुन गुनगुन गाए।
लहर लहर पत्ते लहराए।।
हरियाली पेड़ों पर छाई।
मानो वस्त्र नये पहनाई।2।

अमराई की डाली डाली।
गाए कोयलिया मतवाली।।
स्वर्णमंजरी चमक रही है।
गमगम गमगम गमक रही है।3।

ना ही ठंडी ना ही गर्मी।
करे बसंती ऐसी नर्मी।।
मौसम देखो सबको भाए।
स्वागत ऋतुराजा तुम आए।4।

मदन और रति के हो प्यारे।
प्रेम नेम के तुम रखवारे।।
पावन प्रीत सदा बरसाना।
जनमन को तुम ही हरसाना।5।

फूल खिले सरसों में पीले।
स्वच्छ अंबर नीले नीले।।
राह तके साजन की गोरी।
बैठी कैसी चोरी-चोरी।6।

जब से

गेट खुलते ही गले लग जाता है
सन्नाटा,..!
अब कोई शब्द नहीं,
बच्चों की शैतानियां जारी है,
कोई रोकने वाला नहीं,
समान बिखराते हैं तो,
कोई कहने वाला नहीं।
अब सब्जी वाले आते हैं,
तो नहीं होते मोल भाव।
दूध वाले से नहीं कहा जाता,
बिन पानी के दूध लाव।
कामवाली से कोई नहीं पूछता
खबरें आस-पड़ोस की,
आँगन की तुलसी को,
मिल जाता है पानी कभी-कभी
गायब है उसमें लगा चंदन बंदन।
पूजा घर में शांति है
अब ऊँचे स्वर में
नहीं करता कोई वंदन।
पौधे छितराए हुए हैं।
टूट गए हैं उसमें से ताजे फूल
छाई है चारों ओर केवल धूल।
नीरवता ने कैसे घर को जकड़ लिया है।
जब से
माँ ने बिस्तर पकड़ लिया है।

चुपके-चुपके

अब आना बसंती तुम चुपके-चुपके।
मत जाना बसंती तुम चुपके चुपके।

फूलों कलियों में मुस्काओ।
भँवरों के संग गुनगुन गाओ।
आम्र मंजरी को चमकाओ।
पत्तों पत्तों में लहराओ।
इठलाना बसंती तुम चुपके चुपके।
चली आना बसंती तुम चुपके चुपके।

महुआ में मादकता लाओ।
मीठी कोयल राग सुनाओ।
पत्ते कोमल भी चमकाओ।
पतझड़ को अब दूर भगाओ।
लहराना बसंती तुम चुपके चुपके।
अब आना बसंती तुम चुपके चुपके।

ठंडी को फिर पास न लाओ।
गर्मी से न तन को तपाओ।
पुरवाई संग खूब इठलाओ।
तनको मनको भी सह लाओ।
महकाना बसंती तुम चुपके चुपके।
अब आना बसंती तुम चुपके चुपके।

भूख

केवल एक जगत में है, कहते हैं जिसे हम भूख।
मिट जाए तो सुख में हों, नहीं मिटे तो भारी दुख।

होते सदा फसाद यहाँ, सदा भूख के कारण ही।
खोजते हैं लोग सब इस, इस भूख का निवारण ही।

भूखा या छका हुआ हो, अपना अपना है नसीब।
कोई अति अमीर है तो, कोई होता अति गरीब।

भूख निज मिटाना पहले, फिर दूसरों पर ध्यान दे।
भूख बराबर सबकी है, सबको बराबर मान दे।

भूख मिटाने हथकंडे, लोग अगर अपनाते हैं।
भूख मिटे ना सुखी रहे, धोखा खुद ही खाते हैं।

कई रंग प्रकार के भी, पाए जाते भूख यहाँ।
ज्ञान और विज्ञान भूख, देखे जाते जहाँ-तहाँ।

भूख साहित्य साधक की, दिशा जगत को देते हैं।
और कला उपासक भूख, संस्कृति सहेज लेते हैं।

भूख हवस की भी होती, जो कर देता है अंधा।
बचो सदा इसी भूख से, मत करना गंदा धंधा।

भूख मिटाओ और करो, मन में तुम संतोष सदा।
फेर मत निन्यानवे का, करके रखना रोष सदा।

पुकार

जंगल कटते देखा तो, पंछी करे पुकार यहाँ।
क्या बिगाड़ा है तेरा, काटे क्यों हो डार यहाँ।
पेड़ों पर हम रहते हैं।
नहीं तुम्हें कुछ कहते हैं।
हम तो नहीं सहाते कुछ,
सबकुछ तेरे सहते है।
दिखता नहीं किनारा है, डूबते है मझधार यहाँ।
जंगल कटते देखा तो, पंछी करे पुकार यहाँ।
देता मुझको चारा है।
काटा जंगल सारा है।
बोलो अबहम कहाँ रहे,
कोई नहीं सहारा है।
जाए कहाँ बताओ अब, उजड़ा है संसार यहाँ।
जंगल करते देखा तो, पंछी करे पुकार यहाँ।
जिस मानव को बुद्धि दिया।
कैसा वह उपयोग किया।
नीली छतरी वाले! सुन,
सबकुछ मेरा लूट लिया।
तुम्हीं सद्बुद्धि दे इनको, विनय है बारंबार यहाँ।
जंगल कटते देखा तो, पंछी करे पुकार यहाँ।

भाईचारा

रखना भाईचारा मेरे देश में, समझो सभी हमारा मेरे देश में।
हिंदू रहते देश में भाई।
मुस्लिम रहते सिक्ख इसाई।
भारत ने सबको अपनाया।
सबने सबका साथ निभाया।
बहे प्रेम की धारा मेरे देश में, रखना भाईचारा मेरे देश में।
एक दूजे की हो बड़ाई।
उनमें होती नहीं लड़ाई।
हो जाता है जब भी खटपट,
मिल जाते हैं फिर से झटपट।
मिट जाताअँधियारा मेरे देश में, रखना भाईचारा मेरे देश में।
पढ़ते हैं हिंदू वेद पुरान।
मुस्लिम पढ़ते अपने कुरान।
सिक्खों को गुरु ग्रंथन प्यारा,
बाइबिल में ईशा नजारा।
सबसे हो उजियारा मेरे देश में, रखना भाईचारा मेरे देश में।
सब धर्मों के तीज त्यौहार।
मिलकर करते हैं व्यवहार।
होते घर में आना जाना।
मिलना जुलना गले लगाना।
यों सद्भाव हमारा मेरे देश में, रखना भाईचारा मेरे देश में।
वसुधैव कुटुंब का भाव यहाँ।
सब को सबसे लगाव यहाँ।
विश्व गुरू कहलाता भारत।
सब से रखता नाता भारत।
प्रेम कभी ना हारा मेरे देश में, रखना भाईचारा मेरे देश में।

जीवन साथी

पड़ गए फेरे आज, अब तुम जीवन साथी हो।
बन गए हम हमराज, अब तुम जीवन साथी हो।

तुम हो साजन मैं हूँ गोरी।
बांध रखना प्रेम की डोरी।
सदा साथमें कदम बढ़ाना।
आगे पीछे मत रह जाना।

तुम्हीं मेरे सरताज, अब तुम जीवन साथी हो।
पड़ गए फेरे आज, अब तुम जीवन साथी हो।

हम तुम राही एक डगर के।
साथी हैंहम कठिनसफर के।
थामे रखना हाथ हमारे।
छूटे न कभी साथ हमारे।

कभी मत हों नाराज, अब तुम जीवन साथी हो।
पड़ गए फेरे आज, अब तुम जीवन साथी हो।

रूठें गर तो हमें मनाना।
दूर गए तो पास बुलाना।
अगर रूठे तुम मैं मना लूँ।
सारी बिगड़ी बात बना लूँ।

सदा देना आवाज, अब तुम जीवन साथी हो।
पड़ गए फेरे आज, अब तुम जीवन साथी हो।

सहारा

दीन दुखी का बनें सहारा,
मानव हैं कर्तव्य हमारा।
जगमें अनगिन प्राणी होते,
पर मानव यहाँ बुद्धि वाला।

वह चाहे तो बन सकता है,
दीनों हीनों का रखवाला।
प्राणी तथ्य समझ यह सारा,
कैसे होता दिन गुजारा।

खेले कोई लाखों में तो,
कोई फाँकेमस्त यहाँ पर।
रहता कोई बंगला में तो,
जगमें कोई होता बेघर।

कैसे-कैसे यहाँ नजारा,
करते रहते हमें इशारा।
पशु पक्षी भी प्राणी होते,
उनको मदद की है दरकार।

हमसे जुड़े हुए हैं सारे,
दौड़ो करे गर वह चित्कार।
तू बहाना प्रेम की धारा,
सबकी नैनोका बनतारा।

कोई नारी अबला मत हो,
न अनाथ हो एक भी बच्चा।
हो सबको सनाथ करने का,
प्रण सबके सबका ही सच्चा।

करो बुलंद यहां यह नारा,
नहीं बहे कहीं अश्रुधारा।
युवा तुम्हारे कंधे पर ही,
टिका जगत का भार सदाही।

मात-पिता का बनो सहारा,
जीवन का है सार सदा ही।
जागो है कर्तव्य तुम्हारा,
कोई नहीं हो बेसहारा।

तपस्या

एक....एक से दूरी नहीं बनाओगे।
कोरोना से कैसे फिर लड़ पाओगे।

इसे तपस्या मान जरा।
खतरे को पहचान जरा।
अपना भी औरों की भी,
अभीबचाओ जान जरा।

लापरवाही यूँ ही यहाँ दिखाओगे।
कोरोना से फिर कैसे लड़ पाओगे।

सरकारों का कहना है।
दूर सभी से रहना है।
कष्ट उठा ले अभी जरा,
फिर ये दुख ना सहना है।

तपका मीठाफल यहाँ नहीं पाओगे।
कोरोना से कैसे फिर लड़ पाओगे।

इतनी बड़ी समस्या है।
छोटी जबकि तपस्या है।
बात समझ ना पाते क्यों,
बुद्धि वालों कहो क्या है?

जंग जीतकर जबतक यहाँ न आओगे।
कोरोना से फिर कैसे लड़ पाओगे।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

आज जहाँ विश्व कोरोना वायरस के प्रकोप से जूझ रहा है। बहुत से देशों मे लॉक डाउन है। लोग अपने-अपने घरों में कैद है। यह अति जरूरी भी है। इस महामारी से निपटने का एक यही उपाय है। क्योंकि उसके इलाज हेतु कोई भी दवाई उपलब्ध नहीं है। हम सब भी अपने अपने घरों में ही रहने को मजबूर हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि हम कर्म करना छोड़ दें। कर्म की दिशा को दूसरी ओर मोड़ सकते हैं।

संसार में ऐसे बहुत से लोग भी हैं जो इस वातावरण में सकारात्मक पहल कर रहे हैं। और लोगों को इस वक्त का सदुपयोग करने के लिए प्रेरणा स्रोत बन रहे हैं। उनमें से ही संपादक प्रीति सुराना एवं समकित सुराना हैं। जो अंतरा शब्द शक्ति समूह के माध्यम से कलमकारों को जोड़कर उनके साहित्यिक रुझान को गति प्रदान कर रहे हैं। उनको रचना हेतु प्रोत्साहित करके उनकी रचनाओं को छपवाने का कार्य कर रहे हैं। इससे उनका उत्साहवर्धन हो रहा है,और वे सभी इस कार्य में लगे हुए हैं।जिससे लहक डाउन का जो समय है उसका भरपूर उपयोग हो रहा है। समाज को दिशा देने हेतु साहित्यकार लगे हुए हैं।

उसी प्रेरणा से मैं भी इस पुण्य कार्य में लगी हुई हूँ। अपनी रचनाओं को आपके समक्ष प्रस्तुत कर रही हूँ। जो मेरी माँ स्वर्गीय श्रीमती चमेली तिवारी को समर्पित तथा साहित्यकार पिताजी श्री सी.पी.तिवारी 'सावन' द्वारा प्रेरित है। ये रचनाएँ समाज के लिए उपयोगी साबित हो सके। मेरी यही कोशिश है।

पाठकों के प्रोत्साहन से साहित्यकार प्रेरित होते हैं। सो इन रचनाओं को पढ़कर प्रतिक्रिया अवश्य दें। मुझे आपकी समीक्षा का बेसब्री से इंतजार रहेगा।

रचनाकार
मधु तिवारी
Mobile - 9753806406

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com
978-93-5372-124-4
मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/